Mr. Saroj Kumar
Assistant Professor
Education Department (B.Ed.)
R.M. College, Saharsa
Contact No. - 9334195883

Sub. - Paper-II (Contemporary India & Education)

Q. समाज में विभिन्नता, असमानता व हाशियाकरण के शैक्षिक निहितार्थ का वर्णन करें ?

हमारी सम्पूर्ण प्रकृति तमाम विविधताओं से भरी पड़ी है। भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवों, पेड़-पौधों, नदी नालों, स्थलाकृतियों आदि के रूप में यह विविधता ही प्रकृति का सौंदर्य है। हमारा समाज भी भिन्न-भिन्न रंग, रूप, क्षमता, प्रकृति, भाषा, वेशभूषा, खान-पान, आचार-व्यवहार, आस्था-मान्यता, धर्म-संप्रदाय आदि से संबंधित विविध व्यक्तियों व समुदायों से समृद्ध है। यही विविधता हमारे समाज की खूबसूरती है। हमारे समाज में विद्यमान विभिन्न समुदाय व लोगों की क्षमताएँ व काबलियत अलग-अलग है। एक लोकतांत्रिक सत्ता व व्यवस्था की यह भूमिका होनी चाहिए कि इन विविध जनों व समुदायों के विकसने व एक बेहतर जीवन जीने की व्यवस्थाओं को बिना भेद-भाव के सुलभ कराए। परंतु हमारे समाज ने मानव सभ्यता के विकास क्रम में सत्ता व व्यवस्था के भिन्न-भिन्न रूपों को देखा व उन वर्चस्ववादी ताकतों के अनुरूप जीने को बाध्य हुआ। सहस्त्राब्दियों तक सुविधाविहीन, धन, प्रतिष्ठा व ताकत से महरूम एक बड़े वर्ग को सुविधायुक्त, बेहतर व सम्मानित जीवन जीने की व्यवस्थाओं से दूर रखा गया। सुविधाओं से वंचित किए जाने का आधार बना जन्म का कुल, लिंग, निवास स्थान, भाषा, आस्था व मान्यताएँ, धर्म व सम्प्रदाय आदि। ये आधार जो मूल रूप में विविधताएँ है के कारण किसी वर्ग व व्यक्ति विशेष को विकसने के लिए जरूरी मौलिक सुविधाओं से वंचित किए जाने से ही असमानता जन्म लेती है।

इस प्रकार असमानता सत्ता व वर्चस्ववादी ताकतों के प्रत्यक्ष या परोक्ष व्यवहार द्वारा विकास के

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

साधनों के असमान वितरण से उत्पन्न हुई वह स्थिति है जिसमें एक ही समाज में भिन्न-भिन्न जन व समुदाय विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में रहने को बाध्य होते हैं। दूसरे ढंग से देखा जाए तो 'असमानता' सत्ता व वर्चस्ववादी ताकतों का व्यवहार भी है और समाज की स्थिति भी। विकास हेतु आवश्यक सुविधाओं से वंचित होने तथा इस असमानता के व्यवहार के कारण व्यक्ति व समुदाय के अंदर वंचन का भाव जन्म लेता है और वह स्थिति जिसमें वंचित व्यक्ति जीता है 'वंचना' के रूप में जाना जाता है। व्यक्ति तथा समूह के अंदर वंचन का भाव इस कारण से भी हो सकता है कि वह जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहा हो और इस संघर्ष के बावजूद भी उनसे वंचित हो या शारीरिक तथा मानसिक रूप से इतना अक्षम हो कि सामान्य सुविधाओं के उपलब्ध रहने के बावजूद भी उसका उपयोग न कर पाए।

समाज में विविधता, असमानता व वर्गीकरण के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार है कि विविधता प्रकृति के साथ-साथ निवास कर रहे लोगों में भी ज्यादा है। कई मान्यताओं, विश्वासों, लोक-परम्पराओं, पद्धतियों, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा तथा अन्य कई सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं वाले लोग इस देश में निवास करते हैं। शिक्षा के संस्थानों में मौजूद लोग भी इसी विविधता को धारण किए होते हैं। अतः हमें शिक्षायी वातावरण में अवश्य इन विविधताओं का सम्मान करना चाहिए। क्योंकि विविधता इस समाज की पूंजी है, इसका सौंदर्य है जिसको सँजोना शिक्षा का दायित्व होना चाहिए।

अतः एक शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह एक ऐसे शिक्षायी माहौल का निर्माण करे जिसमें विविधताओं का सम्मान हो, किसी भी प्रकार की असमानता का व्यवहार न हो, किसी भी प्रकार की असमानता का व्यवहार न हो तथा एक समावेशी वातावरण में बच्चों को विकसित करने का अवसर मिले।

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA